ॐ

श्री गुप्तगंगा महात्म्य

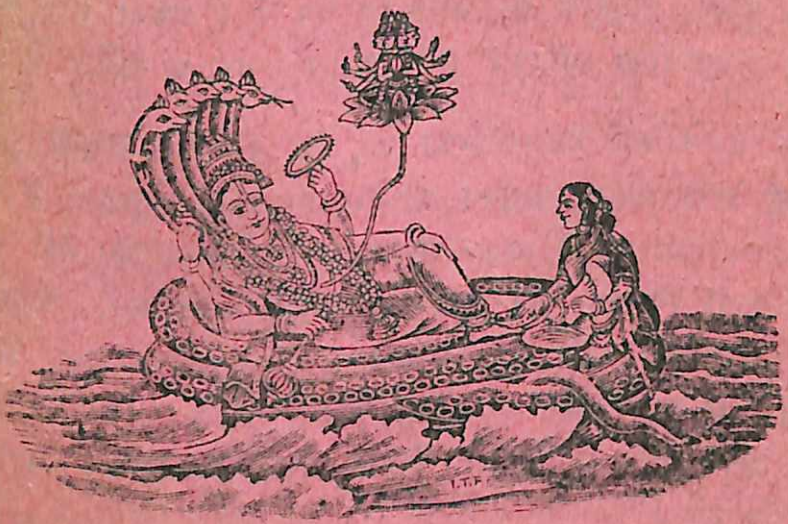

लेखक :- केशवनाथ हण्डू एम० ए० बी एड. शास्त्री, प्रभाकर.

संग्रहकर्ता :- १ अमरनाथ रैणा, Teacher H. S. S. SHALMAR.

२. चमनलाल जी कौल I/C Bee Keeping BREIN.

प्रकाशक :- Well Fear Committee,
Asthapan - GUPTGANGA, KASHMIR.

मूल्य :- २५ न ०

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

पूर्वकथन

यह 'गुप्तगंगा' छोटी सी पुस्तक गुप्तगंगा वेलफेयर कमेटी की तरफ से जनता जनार्दन को पेश की जा रही है। यहां हम ने इस पवित्र तीर्थ के विषय में अपनी ओर से एक भी शब्द ऐसा नहीं लिखा है जो कि प्रमाणित नहीं है। चाहे वह (प्रमाण) वेद, पुरान, इतिहास या जनश्रुति का है। इसका सारा महात्म्य और इसका सारा इतिहास इन्हीं प्रमाणों पर आधारित है।

हमने यहाँ वह कोशिश की, कि इस का प्राचीन गौरव, प्रतिष्ठा तथा प्रमाण अमूल्य प्राचीन तथा नवीन पुस्तकों के आधार पर हो। हम इसकी बाह्य शोभा के वर्णन में लग भग चुप ही रहें! क्यों कि इस की शून्य दशा तथा अन्य बातें जनता की सहायता चाहती हैं। इसी कारण श्रद्धालु भक्तों से यह प्रार्थना है, कि वे यहां आकर एक तो अपने जीवन को सफल बना दें और इसके साथ ही अपनी संस्कृति तथा सभ्यता की ध्वजा को फहराते रहें।

हम आशा करते हैं कि आप जरूर यहां आकर इसकी शून्य अवस्था को थामलेंगे तथा इस संस्था के साहस को द्विगुणित करेंगे नहीं तो एक समय जलद ही ऐसा आ रहा है जब इस प्राचीन तीर्थ को हमारी जाति के शत्रु हथ्या लेंगे और हम मुंह तकते रह जायेंगे।

गुप्तगंगा वेलफेयर कमेटी
काश्मीर

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

ॐ

ईशभर,ईशालय,वामनगंगा या गुप्तगंगा

जनता इस बात से सहमत है, कि काश्मीर न केवल अपने सौन्दर्य से ही प्रसिद्ध है बल्कि अपने पतित-पावन असंख्य तीर्थों से भी यह विश्व-विदित है। पुराणों के अनुसार कहा जाता है कि "भारते यानि तीर्थानि तानि काश्मीर मण्डले" अर्थात् जितने असंख्य-तीर्थ भारतखण्ड में है, उन सबों की प्रतिष्ठा काश्मीर में है। ये तीर्थ जल, स्थल तथा पहाडों पर है, जिस कारण यह काश्मीर भूमि चारों तरफ हंसमुखी पहाड़ों से घेरी हुई है अतएव पर्वत निवासी शिव और शक्ति ने यहां सब कहीं अपना स्थान नियत किया है और इसके ऐश्वर्य, शोभा तथा महिमा पर चार चान्द लगा दिए तथा अपने भक्तों के लिए इसे निर्वाण का स्थान बनाया हमारे आशुतोष शङ्कर ने पहाडों और उपत्यकाओं को अपना विहार-क्षेत्र बनाकर अपने भक्तों के लिए मोक्ष का द्वार खुला रखा है। जिस मुक्ति-दाम के लिए दुःसहाय तप तपने वाले इन्द्रादिदेव लालायित रहते हैं, उसी को भूदेव ऐसे ही अपूर्व महिमावाले सुरम्य तीर्थों में स्नान, दान व तपस्या करने से प्राप्त करते हैं। उन्हीं तीर्थों में हमारा यह एक तीर्थ है, जो बहुत ही प्राचीन समय से कई शोभन नामों से सुप्रसिद्ध है। जैसे— ईश - भर ईशालय, वामनगंगा या गुप्तगंगा इनमें से जिस किसी भी नाम को लिया जाए, यही बात सिद्ध होती है, कि यह पवित्र स्थान ईश्वर का अपना आलय अर्थात् 'घर' है। 'भर' काश्मीरी भाषा में दरवाजे को कहते है, इसी से गुजर कर आदमी अपने गृह के अन्दर जाता है।

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

अतः 'इला भरः' का तात्पर्य है कि इला-ईशा ईश्वर इसीसे गुजर कर आपने नाट्यस्थान 'ईशालय [[जो इसी स्थान के पर्वत के ऊपर मौजूद है]] पर जाते हैं।। वा भर का अर्थ है धारण करना, पोषण करना (भृञ् धारण पोषणयोः :)) भरति इति भरः ।। ईशेन शिवेन भृतः धारितः पोषितः वरः ।। अर्थात् शिव से धारण, धारणा और पोषित किया गया।। इसी प्रकार ईशालय का अर्थ स्पष्ट ही है कि यह ईश्वर सर्वेश्वरी शिवा का आलय गृह है ।। तथा गुप्त-गंगा इस नाम से यह सिद्ध होता है, कि शाम्भु की सभाओं में गुप्तभाव से निवास करने वाली गंगा जी की यहां सर्वोत्तम प्रतिष्ठा है ।।

यहां हम अपनी बात को सिद्ध करने के लिए भूतेशा संहिता के भैरव तथा भैरवी संवाद को लेते हैं ।। वहां भैरव भैरवी से इस तीर्थ के विषय में कहता है, कि यह तीर्थों की अमरेश्वरी है :—

भैरवः— शृणुष्वान्ये महादेवी यामईशा विद्यारिणी। उत्कृष्ट फलदा देवी तीर्थानां अमरेश्वरी ।। (भूत० सं०)

इसी उत्तमोत्तम संहिता के आधार पर यहां इस ईशा भर ग्राम के तीर्थों की उत्पत्ति तथा महिमा के विषय में लिखा जाता है कि भैरव भैरवी से कहता है कि प्रमत्त नाम के दानव ने सारे जगत् को वश में किया और दिक्पालों को भी बहुत कष्ट दिया ।।

पुरा विहारमाणस्य भैरवस्य महात्मनः ।।
उन्मत्त रक्त सत्तस्य रुद्रः प्रादुर्भूत किल ।।
स चकार वशे सर्वं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।।
विप्रचित्तिकुलोद्भूतः प्रमत्तो नाम दानवः ।।
दिक्पालान् बाधयामास विमानगिति किंश्रुतम् ।।(भूत० सं०)

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

इसके अनन्तर उक्त देवता लोग बहुत तंग आए, उन्होंने भरत की स्तुति इस प्रकार की :—

ॐ तस्मै नमो भगवते निरिशाय कवये दिने ।।
तत्त्वमेनं परं शुद्धं स्वप्रकाशं तमुं वै सत्त्वरूपिणम् ।।
ॐ नमो भगवते भीमाय घोररूपिणे ।।
यं विदित्वा नन्जन्मनित्यं प्रकाशः स्वयंप्रदृश्यते ।।
ॐ नमो भगवते तुभ्यं प्रद्युम्नायाव्ययरूपिणे ।।
येषिणो यं प्रपन्नास्तेन यन्तव्यः शिक्षितव्रताः ।।

अर्थः : भगवान् महादेव को नमस्कार हो, जो इस चराचर के स्वरूपी सद्गुण शरीर में मौजूद है ।।

उस प्रभु और स्वरूप वाले ऐश्वर्य शाली भगवान को प्रणाम हो, जिस को छोड़कर स्वयं प्रदर्शन और किसी को भी नहीं उपलब्ध होते हैं। उस ॐकार स्वरूप भगवान् को दण्डवत् हो, जिसके पास जाने के इच्छुक धारण व्रत वाले यतीगण जाते हैं।

इस स्तुति से भैरव प्रसन्न हुआ और वह शिक्षित हुआ तो उस महाहास भैरव की गणना का पचासी शत (सौ) धाराओं में विभाजित हुआ और यह तत्तीर्थ शतवत्सर (सैंतीसौ धाराओं वाला) नाम से प्रसिद्ध हुआ। तदेविषय श्लोक लिखित :—

शतत्रयं प्रसन्नस्तु भैरवो महाहासनन्दितः ।।
तस्मात् तेनोऽवसोद्दिष्टः पञ्चशीते भैरवे स्थिते ।।
तत्तदेव शतं भागैर्लब्धं तत्तीर्थं स्वनामतः महेश्वरेण ।।

यह शतवत्सर नाम का तत्तीर्थ पर्वत पर नाम से १५७०

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

फुट ऊपर है। देखिए कलहण की राजतरंगिणी जिसका अनुवाद M.A. Stein ने किया है। इसी के शब्दों में :—

"One of them SATADHARA is already mentioned by Khemendra. It is passed in a narrow gorge some 1500 feet below the rock of sarvesuari."

इस शतदार तीर्थ के बनने पर शिव ने अपने उत्तम त्रिशूल को उठाकर देवों से कहा, कि मैं इस अपने त्रिशूल से इस मत्त दानव को मार डालूँगा। ऐसा सुनते ही उस असुर ने शतधारा से पैदा हुई गंगा को पाताल में लेलिया। महादेव ने त्रिशूल से पृथ्वी को खोदा जिस के प्रहार से पाताल से वह गंगा निकल आई और जिस कारण यह पाताल से निकल आई इसी से इस का नाम 'पाताल गंगा' पडा। देवों की स्तुति पर इसने शतधारा तथा पाताल गंगा दोनों तीर्थों में अपना निवास स्थान स्वीकार किया।

अमरस्यास्य निर्यातात्छतधारोद्भवा नदी
शूल प्रहारदुद्भूता पातालादमरेश्वरि ॥
पातालान्निसृतं तोयं शतधारोद्भवं यतः ।
आगतं च ततः ख्याता गङ्गा पाताल सम्भवा ॥ (भृ.सं०)

ऐसा होने पर शिव ने देवों से कहा, कि मेरे त्रिशूल के प्रहार से मत्त दानव भी मारा गया अतः मेरे विहार के स्थान में मेरे भक्तों को कोई भी पीडा या सांसारिक भय नहीं है। वे सारे पापों से मुक्त होते हैं तथा निर्वाण को प्राप्त करते है।

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

ऐश्वर्यं मम पश्यध्वं मृतिरमृतीयते ।
मद्भयाच्च मृतिनास्ति जरा नास्त्यत्र निश्चितम ।
तेषामन्ते मत्स्मृतिर्वा भवेद्वै ईशालये विजयेशे मृदिश्च ॥
(भृ० सं०)

इस प्रकार के उत्तम वर को सुन कर देवता लोक आनन्द सागर में डूब गए और अपने २ अंशों में वहां प्रतिष्ठित हुए ।

अंशैः स्थित्वा ह्यत्र विहारभूमौ सन्निध्यं च
भैरवस्य दृष्ट्वा दृष्ट्वा देवाः स्वालयान् प्राप्नुवन्तः ॥

जिस कारण इस स्थान में भैरव, भैरवी और सारे देव अपने अपने अंशों में प्रतिष्ठित है, इसलिए यह स्थान ईशालय नाम से पुकारा जाता है। और यहां भैरव का आलय (घर) भी यहां है अतः यह ईशालय इस नाम से भी पुकारा जाता है। यहां महेश्वर के साथ ईश्वरी (महादेवी) विहार करती है, अतः यह ग्राम ईश-विहार (ईश-भर) के नाम से प्रसिद्धि में आया ।

ततः प्रोक्तः पुराविद्भिः ग्राम ईशालयाख्यया ।
ईश्वरी विहरेदत्र महेश्वर समायुता ।
तस्माच्च प्रथितो ग्रामो लोके ईश-बिहारिणी

कल्हण भी अपनी प्रसिद्ध राजतरंगिणी में लिखते हैं, कि ईशभर ईशेश्वर नाम से निकला है। यह ईशेश्वर नामक मन्दिर आर्य राजा समधिमत ने अदने श्री गुरु ईशान के नाम पर प्रतिष्ठित किया है —— यह पवित्र स्थान है जो गुप्तगंगा के नाम से प्रसिद्ध है। इस तीर्थ के चारों तरफ पुराने पत्थर बिछाये गए है

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

व्यक्तियों के पुरखोंने मन्दिरोंके केवल खण्डरात बचचे हैं और कुछ खण्डरात इस चश्मेके इर्दगिर्द हैं तथा कई इस ग्राम में इधर उधर बिखर पड़े हैं।।

इसी विषयको लेकर M.A Stein के अंग्रेजी अनुवाद को देखिये :—

Temple of Isesvara.

Isabar derives its name from the Shrine of ISESVARA which King Samdhimat Arjya Raja according the Rajatarangini corrected in honour of his Guroo Isana. An earlier form, Isabbor, which is found in an old Gloss of the chronicle and which was evidently heard also by ABUL-FAZL helps to connect Isabr and Isesvara. Isabar is still much frequented as a pilgrimage place. The attraction is a sacred spring known as Gupta-Ganga which fills an ancient stone lined tank in the centre of the village. This convenient yet acce-ssible is Tirtha is the scene of a popular pilgrimage on the Vaishakhi Day and has fairly Obscured the importance of the mountain seat of Sarvevvari A ruined mound immediately behind the tank is popularly believed to mark the site of ISEBARA shrine. The numerous remains of ancient buildings

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

are arround the sacred Spring and elsewhere in the village. They probably belong to the various other temples, the erection of which is mention by Khalhana at the site of SURESWARI.

[Khalhan's Rajtaranggni
Translated by M. A. Stain.]

इसी प्रकार तारीख हसन- भाग २ अनुवाद मौलवी मुहम्मद इस्माईल सफा नंम्बर ५४४ से देखने पड़ता है कि यहीं ईशाबारी में ईशानदेव नामक एक तपस्वी धर्मनिष्ठ साधु तपस्या करता था, जिस ने राजा जी इन्द्रसदमत से फाँसी दिए गए हुए मंत्री को योगिनियों से पुनर्जीवित किया और उन्हीं की सहायता से उसे राज्याभिषेक कराया, उसी आभार मुक्त की यादगार में उस मंत्री ने पीछे यहीं (ईशाबारी में) एक मन्दिर की प्रतिष्ठा किई॥

इस बात को स्पष्ट करने के लिए यहां मौलवी मुहम्मद इस्माईल के ऊर्दू अनुवाद को हिन्दी अनुवाद में पेश किया जाता है॥

"इधर राजाजी इन्द्रसदमंत मन्त्री के सहयोग तथा सहायता से ४४४४ कलियुग में पिता के अधिकृत सिंहासन पर आरूढ़ हुआ॥ कुछ समय सहानुभूति तथा कृपालुता में व्यतीत किया॥ निदान अपने मंत्री से रूष्ट हुआ तथा उसने इस वर्ष तक उसे कारागार के दृढ़ बन्धन में रखा और उसके पास जिस किसी प्रकार की पूँजी थी लूट लिई, लेकिन जानता मंत्री को साधुनीति से प्रसन्न था, और उस में इस प्रकार की कानाफूसी होती थी कि किसी न किसी दिन मंत्री ही राजा बनेगा,

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

यह वार्ता राजा के कान में भी पहुँच गई, आज्ञा मिली कि मंत्री को फाँसी देदे। परिणामतः राजकीय अनुशासन के अनुसार मंत्री को सोली पर चढ़ा दिया गया और बेचारे के प्राण पखेरू उड़ा गए। लेकिन इस के अनन्तर ही राजा पर भय तथा उन्मत्तता सवार हो गई और कई दिनों के अनन्तर इस संसार से उसने भी प्रस्थान किया। ३७ वर्ष की शासनावधि।

चूँकि राजाजी इन्द्र निःसंतान था। इसलिए इस की मृत्यु के कुछ दिनों तक काश्मीर राज शासक से रहित था। ईशानदेव नामक एक तपस्वी व धर्मनिष्ठ मनुष्य को जो संदमत का निरीक्षक था और बहुत समय से इशाब्बारी के स्थान में एकान्तवासी था जब प्रस्तुत मंत्री की शूली का वृतान्त सुना तो उसके शव की दाह क्रिया के अर्थ शूली के नीच आया। मन्त्री के शव को सोली से उतार कर स्नान देने के लिए प्रस्तुत हुआ। 'कफ' ईशानदेव ने जब उस के ललाट पर दृष्टि डाली तो देखा कि उस पर तीन वाक्य लिखे है :—

[१] जब तक यह व्यक्ति जीवित रहेगा, निर्धन होगा।
[२] दस वर्ष तक कारागृह में रह कर शूली पर मरेगा।
[३] उसके अनन्तर राज्य करेगा ॥

ईशानदेव ने दिल में सोंचा कि इन तीन वाक्यों में से दो का विषय दृष्टिपथ में आ गया है और तीसरे वाक्य का विषय भी निश्चयतः अमल में आएगा। अतः उस का शव वहीं छोडकर एक गुप्त स्थान को ढूंढ़ा। वहां उसे रख कर प्रभु की प्रभुता के इन्तजार में रहने लगा॥ आगे वे लिखते हैं :—

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

एक रात उसने देखा कि योगिनियों ने इसे जिन्दा किया और ईशानदेव की प्रार्थना पर उन्होंने उसे जीवित ही रहने दिया, तो वह ३०३२ कलियुग में काश्मीर का राजा हुआ। उस ने वहां 'संध्येश्वर' का मन्दिर बनाया जहां उसे सूली पर चढाया गया तथा अपने गुरु जी की श्रद्धांजलि के रूप में उसने ईशबर में ईशेश्वर का मन्दिर बनाया, 'थीद' के स्थान में थीदादेवी और 'भिन्नों' में भीमादेवी की यादगार काइम की।

इस प्रकार पुराण और इतिहासों के आधार पर ईशभ ग्राम की प्रतिष्ठा तथा महता के वर्णन करने के अनन्तर पाठकों को इसके पवित्र तीर्थों का नियत स्थान तथा उन की अपूर्व महिमा के विषय से परिचित किया जाता है।

ईशभर ग्राम में - जिस के मध्य में गुप्त गंगा अथवा वामन गंगा का क्षेत्र विराजमान है। जो सन्मुख हंसमु खपर्वत दृष्टिगोचर होता है, उसके एक सुन्दर तथा शोभायमान स्थान पर एक पवित्र तीर्थ है जो सुरेश्वरी या सुरेश्वर के नाम से प्रसिद्ध है। यह प्रभु शङ्कर का सचमुच नाट्यस्थल है। इसके विषय में यह बात अक्षरशः सत्य है, कि यह शक्ति की विहारभूमि है। इसकी सुषमा देखने से ही बनती है। केवल एक बार समाधिस्थ होकर मनुष्य को यहां मुक्ति मिलती है। प्रतिदिन प्रदोष के समय शिव और शक्ति का यहां नृत्य होता है। यहां कर्णों को सुखदेने वाले मधुर गीत सुन पडते हैं। प्रतिदिन देवगण यहां नृत्य देखने के लिए उपस्थित रहते हैं। जिस कारण यहां महादेव तथा महादेवी दोनों रहते है, इसी लिए इसे सर्वेश्वर (पुँ०) तथा सर्वेश्वरी (स्त्री०) दोनों लिङ्गों से पुकारा जाता है। अतएव कई इसे शिव की

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

स्थापना कहते हैं और कई दुर्गा (शक्ति) की। इस पर M.A. Stain से अनूदित इतिहास पढ़ने के योग्य है। यहां हम उसी के कुछ लाइने इस विषय पर पेश करते हैं :—

Khalhanas Rajatrangini

[Translaed by M.A. Stein] Page No 452

Sub-- **Tirtha of Suresvari.**

A sacred site of greater fame and importance is that of the present village of ISBAR which lies about two miles further north on the Dal Shore and a little beyond the Moghul garden of Nishat. The site was known in ancient times as SURES-VARI KSETRA (The field of Sureveshori on a high crag rising from the mountain range to the east of ISABAR village. The seat of Goddes is on a rugged rock some three thousand feet above the village offering no possible room for any building. The numerous shrines errected in her honour were hence built on the gentaly sloping shore of lake below. The Tirtha of Suresvari is often reffered to in Kalhanas and Kashmiri an textes as a spot of exceptional holiness. It was particularily sought by the pious as a place to die in. The pilgrimage to Survesuari is connected

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

with visits to several springs in and about Isabari. One ef them SATADHARA is already mentiened by Khemendra. It is passed in a narrow gorge some 1500 feet below the rock of Survesvari.

कोई भी काश्मीर का इतिहास लेखक ऐसे महामहिमाशाली तीर्थों के वर्णन करने के पीछे नहीं रह गया है। देखिये ? "आइने अकबरी में" इस के विषय में क्या लिखा गया है :—

AYEEN AKBARY TRANSLATED BY FRANCIS CLADWIN VOLUME No 1

Part 1 The Subah of Kashmir. Page No 417

IN AISHAHBARARY (Ishihari) is a sacred Spring, colled Soorysir (SURYASARA) on the sides of which are idolatrous temples of stone.

The fountain of Shukernag is dry all the year. excepting that when the ninth day of the month fall on a friday, the water springs up in the morning, and continues flowing till the evening, and multitudes of people flock together to part take of the blessing.

इस से यह भी समझ पडता है कि यहां एक ऐसा भी तीर्थ है जो वर्ष भर सूखा रहता है केवल यह रात दिन उसी दिन बहता रहता है जब कि महीने के पहली नवमी के दिन शुक्रवार आए।

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

इसी उत्तमोत्तम सुरेश्वरी क्षेत्र में कोटि तीर्थ (करोड़ों तीर्थ) हैं।

कोटितीर्थमत्र देवि गंगायां संप्रकीर्तितत ।

(भृ० सं०)

इसी के साथ २ चक्रोद्भव, शूलभव, और वामनतीर्थ अत्युत्तम तीर्थ हैं ।

चक्रोद्भवं शूलभवं वामनतीर्थमुत्तमम् । (भृ० सं०)

इस सुरेश्वरी, सर्वेश्वरी तीर्थ के नीचे 'शतधारा' नामी एक पवित्र तीर्थ है। जिस के विषय में हमने ऊपर कुछ कहा है। यहां पत्थरों से बनी कोठरी में दिन-रात जल बून्द २ में टपका रहता है, यहां स्नान करने से कई दुःसाध्य रोग भी नष्ट होते है । यहां के निवासी इसी लिए इसे 'आणकुंठ' के नाम से पुकारते हैं। भृंगेश संहिता के अनुसार यहां श्राद्ध करने से पितरों की मुक्ति होती है। संभव है कि 'श्राद्ध' शब्द को 'आण' बना हो । यहां एक महात्मा स्वनाम धन्य श्री केशव भट्ट जी गुजरे हैं इसलिए इसे केशवभट्ट की 'पुरन' यानि निवास स्थान कहते हैं। इस शतधारा तीर्थ की दूसरी ओर अलोखल तीर्थ है। यहां एक बड़े पथर पर ओखलियां है। जनश्रुति है, कि यहां से ही जगदम्बा खाद्य पदार्थों को इस में कूट कर अपने भक्तों को उन्हें भेजा है, जिस के कारण वे अमर बनजाते हैं। इसी पर्वत से गाँव की ओर आने पर एक तरफ एक महिमाशाली तीर्थ है, जिस का नाम गुप्त तीर्थ या गोपा तीर्थ है। इसके वर्णन के लिए एक अलग पुस्तक की जरूरत है। इसी गुप्त तीर्थ के दूसरी ओर श्रीवर नाम का प्रसिद्ध तीर्थ है। जिस में स्नान करने से नर-

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

क्षण पापों का नाश होता है। इन दो तीर्थों के बीच में 'नारायण गंगा' का तीर्थ है। पूर्वजों से सुना गया, कि यहां पत्थर पर सूर्यदेव की मूर्ति खण्डहर के रूप में आज से ३० वर्ष पूर्व मौजूद थी, लेकिन वह अब नहीं पाई जाती है। इससे समझ पड़ता है कि विश्वदेव नारायण यहां प्रकाश रूप में अपने नाम को सार्थक करता है।

गाँव के दूसरी तरफ आने पर पाताल गंगा एक ऐसी भी नामक तीर्थ है। जिसके प्रादुर्भाव आदि के विषय में पहले ही कुछ कहा गया है। इसी के पास इसवक्त की सडकके किनारे के साथ एक उत्तम तीर्थ चक्रेश्वर का है। यहां सूर्य देव की स्थापना है। कहा जाता है कि इस ग्राम के खेतों के कई एकडों को अपने अमृत से सरसाती है। इस चश्मे के पैंदे पर एक हमवार पत्थर है, जिस पर सूर्यदेव की मूर्ति बनी है, जो स्नान करने से दरिद्रता को दूर करती है। इसके आगे ग्राम की तरफ आने पर सप्तऋषियों का तीर्थ है। देख पड़ता है कि यहां सप्तऋषि प्रत्यक्ष आकर बसे हैं। यहां स्नान करने से मनुष्य की आयु बढती है। इस के आगे क्षेमराज का तीर्थ है। इससे थोड़े ही आगे गाँव से निकलते ही मत्स्य भवन है। यह तीर्थ पितरों को मुक्ति देने के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है। प्रसिद्धि है, कि यहां मलमास और भानुमास में मार्तण्ड क्षेत्र को जाने में असमर्थ सनातनी लोक अपने पितरों को मुक्ति देने की अभिलाषा से यहां आकर श्राद्ध आदि करते हैं। यहां तर्पण आदि करने से पितरों को सौकल्प तक तृप्ति होती है।

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

यः कुर्याच्चात्र वै देवि पितृणां तिलतर्पणम् ।
मधुना गुडक्षीराज्यैर्मन्त्रैरुच्चावचैरपि ।
निरयस्था अपीशानि तृप्यन्ति शतकल्पकम ॥ (भृ०सं०)

इस प्रकार इन उपरि वर्णित तीर्थों की प्रतिष्ठा तथा महिमा के विषय में कुछ कह कर अब हम सज्जनों के ध्यान को एक उत्तमोत्तम तीर्थ की ओर आकृष्ट करना चाहते है जिसका नाम वामनगंगा या गुप्त गंगा है, जो इन सारे तीर्थों के बीच में बडी महत्ता से विराजमान है।

जैसा कि हमने ऊपर कहा है, कि ईशभर या ईशालय भगवान् शम्भु का घर है अतः उसके साथ रहने वाली गंगा देवी का निवास स्थान यहीं है, जिसके कारण वह महादेवा गौरा से छिप कर बैठी है अतः इसका नाम गुप्त-गंगा है। इस ईशभर या ईशालय ग्राम में शिव का सारा परिवार अन्य देवों के साथ उपस्थित हैं; अतः यह बहुत लम्बा चौडा है। यह परिवार इस ग्राम के चार मीलों को घेर कर रहता है। इस का प्रमाण भृंगेश संहिता से देखिए :——

'गव्यूति परिमाणं तु तीर्थमेतदुदाहृतम।"

गव्यूति का अर्थ दो क्रोस। 'गव्यूति स्त्रीः क्रोश युगम' इत्यमरः दो कोसों तक यह ग्राम है। स्पष्ट प्रकार से कहने के लिए इसके परिणाम के विषय में कहा जाता है कि यह ईशालय गोपीक्षेत्र से लेकर वाणीत चर्चाक्षेत्र तक, शालामार से डल सरोवर तक अपने परिमाण में मौजूद है।

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

"आगोपक्षेत्राद्वाणीत अर्चाक्षेत्रान्तः शिवे !
मारशालान्तवः प्रोक्तं सत्यं डल सरोन्ततः।
प्रोक्त इशालयो ग्रामे मन्त्रतन्त्र विशारदैः ॥"

इन उपरि वर्णित सारे तीर्थों में जो स्नान करके इस गुप्त गंगा के तीर्थ में व्रतधारी होकर स्नान करेगा, तत् दास निर्वाण पद को प्राप्त करेगा। वह सारे संकटों से मुक्त होगा। सच्ची शान्ति उसके हृदय को अपना घर बनाएगी।

'अत्र चक्रेश्वरे स्नात्वा तथा वामके शुभे।
श्रीवरे वामदेवाख्ये स्नात्वा मुच्चेत संकटात्।
स्नानं पातल गंगायाः ईश्यास्तु दर्शनात् प्रिये।
सद्यः पापविनिर्मुक्तो याति ब्रह्म सनातनम्"
(भृ० सं०)

इस क्षेत्र में स्नान करने से आयु बढ़ती है, ओज मिलता है, बुद्धि और ऐश्वर्य का विकास होता है।

'इदं पुंसवनं क्षेत्रं-इदमायुष्प्रवर्धनम।
ओजप्रदं महत् क्षेत्रं बलबुद्धि विवर्धनम्॥ (भृ० सं०)

कलियुग में लोक सन्ध्या, स्नान जप और भगवत् पूजा से विमुख होते है। वे दूसरों की स्त्री तथा मद्य आदि पर उन्मत्त रहते है। महापापी और अशान्त रहते हैं

"सन्ध्यास्नान जपार्चादि विवर्जिते घोरधर्मणि
ब्रह्म विद्या परित्यक्ते म्लेच्छविद्याभिशंसनि।
कलिकाले महाघोरे स्त्रीनर बुद्धि विवर्जिते॥"

ऐसे कलिकाल में इस गुप्त गंगा के उत्तमोत्तम तीर्थ में

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

स्नान करने से सब प्रकार के पापों का नाश होता है और ऐश्वर्य की वृद्धि होती है।

"स्नात्वा मुच्येत संकरात्" (भृ० सं०)

अर्थात् हमें स्नान करने से सब प्रकार के पापों के संकटों से मुक्ति मिलती है।

यहां स्नान करने से न केवल पारलौकिक सुख ही मिलता है बल्कि इहलोक में भी सिद्धियां पाँव चूमती हैं॥

अब हम इसके 'वामन गंगा' इस दूसरे नाम के बीच पर जनश्रुति के आधार पर दृष्टि डालते हैं। पुरानों के अनुसार समझ पड़ता है कि यहां जगत-स्वामी विष्णु ने तीन लोकों को बलिदानव के भय से मुक्ति देने की अभिलाषा से वामन औतार धारण करके अपने निवास के लिए तीन कदम दान के रूप में उक्त असुर से मांगे और दो कदमों से पृथिवी तथा अन्तरिक्ष को मापा और तीसरे कदम को उस दानव के सिर पर रख कर उसे पाताल में भेज कर और वहां का राजा उसे ही नियत किया, 'तब दान पकड़ कर दान लेना चाहिए तथा दान देना चाहिए, इस स्मृति को जीवित रखने के लिए विष्णु यज्ञ रचनार्थ शङ्कर के स्थान ईशालय पर आए। वहां उसने यज्ञ किया और यज्ञ के अवशिष्ट जल को वहां डाला जिससे उस तीर्थ को द्विगुणित महिमा वाला और मुक्ति का स्थान बनाया, तब से वैष्णव इसे 'वामन गंगा' के नाम से प्रार्थना करने लगे॥

इसके गुप्तगंगा इस नाम के लिए यह भी प्रसिद्ध है, कि यहां शिवस्वरूप अभिनव गुप्ताचार्य जी ने तपस्या किई है और ज्ञान प्राप्त करके अपने प्रसिद्ध सिद्धांतों का यहां से ही प्रचार

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

किया। इस प्रकार उसी के नाम पर यह तीर्थ 'गंगा', 'वामन गंगा' इन दोनों नामों से बढकर 'गुप्तगंगा' इस नाम से ही जगत विख्यात हुआ। इसी तीर्थ में स्नान, दान तथा पितृतर्पण से मुक्ति मिलती है। यहां अणु-मात्र का दान भी अनन्त फल का कारण बनता है। यह तीर्थ स्नान निसन्देह अनन्त अभिलाषाओं को पूर्ण करता है। यहां के ही जल के लिए पितर चाहते हैं कि हमारी सन्तान यहां आकर कब हमें तिलोदक देगें, हमें मुक्ति मिलेगी।

कदा वो भविता सुतः यो दद्यात्
अत्र सर्वेषां पितृणां तु तिलोदकम्॥ (भृ.सं.)

यह ईश भर स्थान मुगलों के प्राकृतिक प्रेम को जीवित रखने वाले निशात और शालिमार उद्यानों के दरमियान है। यहां डल सरोवर के किनारे उत्तर की तरफ लगभग दो मीलों से आगे स्थित है। यह श्री प्रवरसेन निर्मित काश्मीर मण्डल के अन्तर्गत श्रीनगर से ६ मील की दूरी पर है। श्रीनगर से यहां आने के लिए दो मार्ग है। उन में से एक रास्ता श्रीनगर से डल गेट, श्री महाराजा हरिसिंह से बनवाए हुए बिलवा-रोड के पक्के सडक के किनारे २ चलकर श्री माताज्येष्ठा भवानी के स्थान 'जेटयर' ब्रेन, चश्मेशाही, तथा निशात बाग से होते हुए है। यहां आने के लिए दूसरा रास्ता भी बहुत प्राचीन तथा सुविधा जनक है, यह झील डल के बीचों बीच निकाला गया है। इसके निर्माण के विषय में बुद्धि चकर जाती है और यात्री यह सोंचने के बगैर नहीं रहता है कि इस के निर्माण के विषय में किसी दैवी शक्ति का हाथ अवश्य है। यह रास्ता ऋषिवाटिका

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

[रैणावारी] से गुजर कर चलता है। बहुत कम फैसले वाला लगभग चार मील है। इस पर चलते २ यात्री प्राकृतिक शोभा को लूटता है और साथ ही साथ उस दैवी शक्ति को सराहता जाता है जिसने इस की प्रतिष्ठा की है। इस पर चलते २ यात्री इस किंवदन्ती पर अणुमात्र भी सन्देह नहीं करता है, कि रैणावारी में सर्वगुण सम्पन्न सुरेश्वरी देवी के पूजक स्वनामधन्य श्री १०८ महेश जी चौधरी जाति के शिरोमणि महात्मा रहते थे। उसीने अपनी तपस्या से भगवती को सन्तुष्ट किया और उ से प्रार्थना की, कि कोई रास्ता ऐसा निकाले जो रैणावारी से गुप्त-गंगा के दर्शन के लिए जाते हुए भक्तों के लिए सुविधा जनक हो। भगवती ने प्रार्थना स्वीकार की; क्योंकि 'भगवान् भक्त के वश में है' और कहा, कि कल प्रातः किश्ती में बैठ कर जिधर २ से साँप के रींगने के चिह्न जल में दृष्टिगोचर होंगे, निशान लगाते जाए और उसी के आधार पर मिटी डाली जाए मार्ग बनेगा महामाया की माया अपूर्व है; आज्ञा के अनुसार प्रातः ही साधु जी उठे, साँप का रींगना देख पडा, निशाने लगाता गया, जिस के आधार पर पीछे मार्ग स्थिर किया गया। यही कारण ही कि यह रास्ता साँप की भांति बल खाता हुआ देख पडता है। इस प्रकार गुप्त गंगा का स्थान रैणावारी के निकट तर आगया।

इस रास्ते के विषय में यह भी कहा जाता है, कि यही वितालय मार्ग का बन्द सिकन्दर बुदशकन ने ईश्वालय मन्दिर को तोड कर उस के अमूल्य पुस्तकों को संगृहीत करके उन्हें जल में डाल कर उन पर मिट्टी डाली जिससे कि यह रास्ता पक्का बन। जिसके परिणाम स्वरूप संसार भर के विशेषतः काश्मीरी

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

साहित्य भण्डार को अनन्त काल के लिए अन्धकार की गुफा में छिपा कर रखा ॥

इस विषय के लिए यहां हम "तारीखे हसन" भाग-२ :- १६२ से उसी के शब्दों में कुछ लाइनें पेश करते हैं :——

"सिकन्दर बुदशकन ने अहलिहुनोद की तमाम किताबें इकट्ठी करके तालाबे डल में गरक कर दीं। और इन्हें मिट्टी और पत्थर से पाट करके वितालन मार्ग का बन्द पैदा कर दिया। इन दिनों इसे इशबरी की सद कहते हैं। इशब्रारी का मन्दिर ईशेश्वर मुन-हदम करके उसके पत्थर सद्मजकूर में सरफ करा दिए।"

यह इशबरी का क्षेत्र असंख्य आपदाओं में से गुजर कर अपनी शान से अनन्त काल से अपनी प्रशंसा की ध्वजा को फहरा हुआ चला आ रहा है, चलता है और चलेगा।

इस समय यह पवित्र तीर्थ उस महिमा से पूर्ण है जो कि इस के साथ विद्यमान है। यहां एक शिव मन्दिर भी है, जो भक्तवर काश्मीर के भूत पूर्व राजा श्री रणवीरसिंह जी ने बनाया है। उन्होंने यहां ग्यारह मन्दिर बनाने का प्रण किया था जिसके कारण उन्होंने यहां उनकी बुनियाद भी डाली। उनके बे मौके स्वर्गवास से केवल उन की बुनियाद ही बच्ची रही, जब कि केवल एक ही मौजूदा मन्दिर पूर्ण हुआ था, शेष खण्डर के रूप में विद्यमान है।

कहते हैं कि जब महाराजा अवन्तिवर्म ने सूया की सहायता से काश्मीर को सैलाबों से बचाने का सफल प्रयास किया, वह तो ऐसा करने में केवल इसी से सफल हुआ, कि यहां ही उस ने शङ्कर से प्रार्थना की थी, कि वह जनता--जनार्दन के कष्टों के

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

निवारण के अर्थ सफल बन जाए, जिसके परिणाम स्वरूप वह सफल हुआ। यही इस तीर्थ की अपार महिमा है ।

कलियुग में यही एक ऐसा तीर्थ है जो केवल स्नान करने से ही भक्तों को निर्वाण प्रदान करता है। यहां दूर २ से यात्री 'मेष' संक्रान्ति के पहले दिन व्रत धारण करके आते है, स्नान, दान और पितृ-तर्पण करके जीवन को सफल बनाते हैं ।

इसी प्रकार जन्माष्टी पर भी यहीं सज्जन आकर मुक्ति के अधिकारी बनते हैं। अतः सज्जनों को चाहिए कि यहां आकर धर्म को लूट लें।

'राम नाम की लूट है लूट सके तो लूटे ।
बहुरि तू पछताओगे प्राण जाए जब छूटे ।।

[कबीर]

जिस प्रकार प्राचीन समय से यह तीर्थ साधुओं को समाधि-निष्ठ बनाने में समर्थ हुआ, उसी प्रकार आज भी यह सन्तों को शान्ति देने में समर्थ है। इस को पूर्णतः सिद्ध करने के लिए हम आधुनिक युग के श्री १०८ महात्मा गणों के शुभ नाम लेकर अपने आप को सफल बनाते हैं। वे हैं :— बूहग्राम के स्वामी जी, श्री बालक जी; श्री सर्वानन्द जी ब्रह्मचारी, श्री मुन्निशङ्कर जी जो कि भोजन करते भी समाधिमग्न होते थे और आज कल के शैव सिद्धान्ताचार्य तथा विद्यागण श्री लक्ष्मण जी ब्रह्मचारी।

'बोलो गुप्तगंगा जी की जय'

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

जनता से विशेष प्रार्थना :—

यहां अपनी ओर से हम से जो कुछ हो सका संगृहीत किया। अब जनता से प्रार्थना है कि अगर किसी सज्जन के पास इस तीर्थ के सम्बन्ध में कोई पुराना लेख या पुस्तक हाथ में आए इस कमेटी के पास भेज कर इसे अनुगृहीत करें, जिस से कि आगे के लिए इस कमेटी को साहस बढ जाएगा।

ॐ शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri

PRINTED AT :—
KRISHNA PRINTING PRESS,
Kothi Bagh, Srinagar-Kashmir.

CC-0. Shubhan ji Collection Srinagar. Digitzed by eGangotri